जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर

Rashtradoot

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 30 संख्याः 212 प्रभात उदयपुर, रविवार 4 जून, 2023 आर.जे. 7202 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

दक्षिण भारत में वैस्टर्न घाट के घने जंगलों में कोई भाग्यशाली ही होगा अगर उसे ग्रेटर रैकेट टेल्ड ड्रॉंगो बर्ड आस-पास की अन्य प्रजातियों को गाना सुनाती नज़र आ जाए। लेकिन, ड्रॉंगो गाना नहीं गाती, बल्कि दूसरी चिड़ियों की आवाज़ों की नकल करती है। यह जानकारी दी है एथनो-ऑर्निथॉलजिस्ट समीरा अग्निहोत्री ने, जो गत 18 साल से वैस्टर्न घाट के जंगलों की खाक छान रही हैं और स्थानीय पक्षियों के गाने रिकॉर्ड कर रही हैं। उनकी फेवरेट है, नीली आभा लिए काले रंग की यह चिड़िया, जिसके सिर के सामने की ज़ुल्फ एल्विस प्रैसली जैसी दिखती है, और जिसके टेल फैदर ज़रुरत से ज्यादा लंबे हैं। अग्निहोत्री जब इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साईन्स (बैंगलौर) से डॉक्टरैट कर रही थीं तब उन्होंने पता लगाने का प्रयास किया कि, यह पक्षी इतना नकलची क्यों है। अन्य पक्षियों की आवाजों की नकल करने वाली अधिकतर प्रजातियां सिर्फ प्रजननकाल में ऐसा करती हैं लेकिन रैकेट -टेल्ड ड्रॉंगो पक्षी वर्ष पर्यन्त दूसरों की आवाज़ों की नकल करते हैं। अग्निहोत्री ने पाया कि, प्रायः साथी को रिझाने के लिए नकल की जाती है। उन्होंने कहा, ''हमारी आब्ज़र्वेशन में हमने पाया कि नर व मादा दोनों ही नकल करते हैं, पर इस बारे में हम ज्यादा नहीं जानते क्योंकि नर व मादा एक जैसे दिखते हैं।'' उन्होंने यह भी देखा कि, आमतौर पर साथी को रिझाने के लिए नकल (मिमिक्री) की जाती है पर ये पक्षी खतरा होने पर भी मिमिक्री करते हैं। खासकर तब, जब वे घोंसला बना रहे हों या अन्य प्रजातियों के साथ भोजन कर रहे हों। अग्निहोत्री ने अपने अध्ययन के लिए स्थानीय आदिवासियों, ''सोलिगा'' की मदद ली, जिन्हें इस क्षेत्र की गहरी जानकारी है। सोलिगा लोग इस पक्षी को ''कोःलूकाःरा'' कहते हैं। यह टाइटल सोलिगा समुदाय में उस बुजुर्ग को दिया जाता है जो समुदाय में शांति व्यवस्था बनाए रखता है। ड्रॉंगो को यह नाम, अन्य प्रजातियों के पक्षियों को आकर्षित करने की उनकी क्षमता के कारण दिया गया है। अनुमान है कि, विभिन्न समूहों को व्यवस्थित बनाए रखने में भी ड्रोंगो की भूमिका होती है। सोलिगा समुदाय मानता है कि, ये पक्षी खतरनाक जानवरों के बारे में सूचना देते हैं। अग्निहोत्री का मानना है कि, सोलिगा लोगों को जंगल की गहरी जानकारी है और वन संरक्षण में वे महत्वपूर्ण साबित हो सकते हैं।

गत नौ सालों में मैडिकल कॉलेजों की संख्या दुगनी हो गयी है

2014 में 387 मैडिकल कॉलेज थे और अब इनकी संख्या 660 हो गयी है, पर, खेद का विषय है कि, इनमें से 150 मैडिकल कॉलेजों की मान्यता रद्द होने के कगार पर है

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 3 जून। सरकार को इस बात का संतोष हो सकता है कि चिकित्सा शिक्षा में ज्यादा विद्यार्थियों को प्रवेश की सुविधा प्रदान कर पा रही है, क्योंकि पिछले 9 वर्ष में मैडिकल कॉलेजों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि गई की है। लेकिन क्या सरकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रति न्याय कर पाई है?

किसी भी शिक्षाविद से पूछिये, संख्या बनाम गुणवत्ता के प्रश्न का यही जवाब मिलेगा कि दोनों ही अपनी-अपनी जगह महत्वपूर्ण हैं।

हो सकता है कि कॉलेजों की संख्या में प्रभावी वृद्धि दर्ज हुई हो, लेकिन लगता गुणवत्ता के पहलू को अपेक्षित कर दिया गया है, अर्थात गुणवत्ता का कोई खयाल नहीं रखा गया हो।

केन्द्र सरकार के सरकारी डेटा के अनुसार, मोदी सरकार के पिछले 9 वर्षों में मैडिकल कॉलेजों की संख्या करीब दुगुनी हो गई है। वर्ष 2014 में, देश में 387 मैडिकल कॉलेज थे। 2023 तक उनकी संख्या बढ़कर 660 हो गई है। एक एन.आई.ए. रिपोर्ट के अनुसार, इनमें 22 तो ऑल इंडिया इन्स्टीट्यूट्स ऑफ मैडिकल साइंसेज (एम्स) ही हैं, जबकि 2014 में इनकी संख्या मात्र 7 थी पर ऐसी कई खबरें है कि ऐसे कॉलेजों में से 25 प्रतिशत तो मान्यता के संकट से जूझ रहे हैं, अर्थात इन्हें अभी तक मान्यता नहीं मिली है।

ऐसे समय पर, जब उच्च शिक्षा संस्थानों के पास सिवाय इसके अन्य कोई विकल्प ही नहीं है कि उनके लिये डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर प्लान विकसित किया जाये, अध्ययन एवं अध्यापन का ढांचा तैयार किया जाए एवं मजबूत किया जाये, जिससे ऑफ लाइन तथा ऑन लाइन शिक्षा के विभिन्न मॉडल अपनाये जा सकें तथा ज्ञान के आसान उपयोग को बल प्रदान करने के लिये डिजिटल लर्निंग संसाधनों तक पहुंच हो सके लेकिन 150 मैडिकल कॉलेजों में पर्याप्त फैकल्टी ही नहीं है तथा वहां नियमों एवं प्रक्रियाओं की अनुपालना नहीं हो रही है। नई शिक्षा नीति 2020 का मानना है कि उच्च शिक्षण संस्थानों की सफलता उसकी फैकल्टी की गुणवत्ता तथा उपलब्धता में निहित है। नई शिक्षा नीति उच्च शिक्षण संस्थानों के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **मान्यता रद्द होने का कारण है, इन मैडिकल कॉलेजों में पढ़ाई का स्टैण्डर्ड, फैकल्टी की अयोग्यता व संख्या की भारी कमी।**
- **मैडिकल कॉलेज, फैकल्टी के चयन में वो मापदण्ड नहीं अपना रहे हैं, जो नैशनल मैडिकल कमिशन ने निर्धारित किये हैं।**
- **इन कमजोर 150 मैडिकल कॉलेजों में से पचास मैडिकल कॉलेजों की मान्यता तो रद्द कर दी गयी है तथा बाकी कमजोर मैडिकल कॉलेजों से बातचीत चल रही है और जांच चल रही है, यानी मान्यता बंद करने की प्रक्रिया चालू है।**
- **मैडिकल कॉलेजों में एम.बी.बी.एस. स्ट्रूडैन्ट्स की संख्या भी 51,348 से बढ़कर 1,01,043 हो गयी है तथा पी.जी. स्टूडैट्स का नम्बर भी 31,185 से बढ़ कर 65,335 हो गया है।**
- **पर, अब निर्णय लेने का समय आ गया है, हम क्या चाहते हैं, केवल डॉक्टरों की संख्या में भारी वृद्धि, या योग्य, प्रशिक्षित डॉक्टरों की क्वालिटी को भी बढ़ावा देना चाहते हैं।**

'अगर हमारी सरकार होती तो हमारी विदेश नीति तकरीबन वो ही होती जो मोदी सरकार की है'

राहुल गांधी ने कहा, इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि, हमारा रूस से पुराना विशेष रिश्ता है

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 3 जून। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान सत्तारूढ़ भाजपा और अपनी पार्टी के बीच अन्तर बताते हुए कहा, ''वे (भाजपा) समाज में नफरत पैदा करते हैं, समाज का ध्रुवीकरण करते हैं। वे सबको साथ लेकर नहीं चलते हैं, वे हर व्यक्ति को गले नहीं लगाते तथा समाज को बांटते हैं, और मेरे विचार से, यह चीज भारत के लिये नुकसानदेह है, क्योंकि भारत में सदैव ही खुलेपन वाले संवाद की परम्परा रही है।''

कल वॉशिंगटन के नैशनल प्रैस क्लब में बहुत सारे प्रश्नों के जवाब देते हुए राहुल गांधी ने कहा कि भारत में लाखों करोड़ों भारतवासियों के जीवन को रूपान्तरित कर देने के महान और प्रचुर अवसर हैं। उन्होंने जोर देते हुए कहा, ''ऐसा करने के लिये, बड़े एवं गतिशील तरीके से एक नये भारत की कल्पना करने की जरूरत है और मेरा मानना है कि ऐसा करने के लिये, भारत को सामंजस्य एवं समरसता की जरूरत है। मॉस्को के साथ भारत के पुराने संबंधों की पृष्ठिभूमि में, इस समय चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध को लेकर पूछे गये एक प्रश्न के उत्तर में, राहुल गांधी ने यह कहकर श्रोताओं को चौंका दिया कि हमारी नीति मौटे तौर पर मोदी सरकार की नीति ''जैसी ही होती'' क्योंकि ''इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि रूस के साथ हमारे संबंध रहे हैं और हैं।'' इस प्रश्न पर कि क्या प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सत्ता में आने के बाद भारत की अर्थव्यवस्था बेहतर हुई, कांग्रेस नेता ने अपनी असहमति व्यक्त की और कहा कि देश पिछले चार दशकों की सर्वाधिक बेरोजगारी का सामना कर रहा है तथा महंगाई अनाप-शनाप बढ़

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **पर, राहुल गांधी ने इस बात पर जोर देकर कहा कि, हम बातचीत व ओपननैस (खुलेपन) में विश्वास करते हैं, पर, भाजपा सरकार सैन्ट्रलाइज़ेशन को सही मानती है।**
- **उदाहरण के लिये ''हमारा मानना है कि, छोटे व मध्यम उद्योगों को प्रोत्साहन देना चाहिये, क्योंकि ये छोटे व मध्यम श्रेणी के उद्योग ही भारत की आर्थिक उन्नति के ''ग्रोथ इंजन'' हैं।**
- **परन्तु भाजपा कुछ चन्द लोगों के हाथ में ''पावर व वैल्थ'' (सत्ता व धन) केन्द्रित करना चाहती है।**

भारत और पाकिस्तान की नौसेना का संयुक्त अभ्यास?

नई दिल्ली, 3 जून। ईरान ने अपने एक ऐलान से हलचल बढ़ा दी है। ईरान का कहना है कि वह खाड़ी में नया गठबंधन बनाने वाला है। इसके तहत वह खाड़ी के 3 देशों के साथ-साथ भारत और पाकिस्तान की नौसेनाओं को भी शामिल करेगा। ईरानी नौसेना के कमांडर ने कहा, हमारा देश, सऊदी अरब और खाड़ी के तीन अन्य देश नौसैनिक गठबंधन बनाने वाले हैं। ईरानी मीडिया की ओर से यह दावा किया गया कि, इसमें भारत और पाकिस्तान की नौसेनाओं को भी शामिल किया जाएगा। ईरानी नौसेना के कमांडर शहराम ईरानी का भी इस मामले पर बयान आया है। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र के देश यह समझ चुके हैं कि एक-दूसरे के सहयोग से ही सुरक्षा मिल सकती है। इसलिए यह गठबंधन जल्द ही बना लिया जाएगा। हालांकि, उन्होंने यह साफ तौर पर नहीं बताया कि, ईरानी नौसैनिक गठबंधन किस तरह का होगा। गौरतलब है कि, इन दिनों ईरान का फोकस खाड़ी के देशों के साथ अपने रिश्ते को मजबूत करने पर है।

- **ईरान ने कहा है कि, वह यू.ए.ई और अन्य देशों की नौसेनाओं के साथ मिलकर गठबंधन तैयार करेगा जिसमें भारत और पाकिस्तान को भी शामिल किया जायेगा।**

एक्सिडैंट के कारण सौ ट्रेनों का परिचालन प्रभावित हुआ

नयी दिल्ली/कोलकाता 3 जून (वार्ता)। ओडिशा में बालासोर जिले में कल शाम हुई रेल दुर्घटना के कारण 58 से अधिक ट्रेनों को पूरी तरह से और 10 को आंशिक रूप से रद्द किया गया है जबकि 41 ट्रेनों का मार्ग बदला गया है।

दक्षिण पूर्व रेलवे की एक विज्ञप्ति के अनुसार खडगपुर भुवनेश्वर खंड पर चलने वाली 58 गाड़ियों को निरस्त कर दिया गया है जबकि दस गाड़ियों को आंशिक रूप से रद्द किया गया है। 41 गाड़ियों को परिवर्तित मार्ग से चलाया जा रहा है जबकि एक गाड़ी को परिवर्तित

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **ओडिशा में बालासोर जिले में शुक्रवार शाम हुई रेल दुर्घटना के कारण 58 से अधिक ट्रेनों को पूरी तरह से और 10 को आंशिक रूप से रद्द किया गया है, जबकि 41 ट्रेनों का मार्ग बदला गया है।**

'दुनिया में सबसे धीमी गति भारतीय ट्रेन्स की है'

पर, फिर भी इतने ज्यादा एक्सीडैंट नियमित रूप से क्यों होते हैं यहां?

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 3 जून। क्या बालासोर में हुआ भीषण रेल हादसा तकनीकी संसाधनों के इस्तेमाल से रोका जा सकता था? यह सवाल सभी जगह पूछा जा रहा है क्योंकि दुर्घटना के प्रारंभिक कारणों को लेकर भारतीय रेल्वे ने चुप्पी साध रखी है। क्या यह विनाशकारी हादसा एक ''रेल फ्रैक्चर'' के कारण हुआ? या सिग्नल पास्ड एट डैंजर (एस.पी.डी.) था या मानवीय भूल? या फिर खराब ट्रैक व संसाधन के कुप्रबंधन की वजह से? या फिर भारतीय रेल्वे ट्रेन हादसे रोकने वाला सिस्टम ''कवच'' लागू नहीं कर सका, इस वजह से? कवच असल में स्थानीय तौर पर विकसित सिस्टम ''ट्रेन कॉलिज़न अवॉयडैंस सिस्टम'' (टी.सी.ए.एस.) का अपग्रेडेड संस्करण है।

कवच सिस्टम, जो कि अगर कोई ट्रेन ड्राइवर सिग्नल चूक जाए तो तुरंत एलर्ट देता है और ब्रेक पर नियंत्रण कर लेता है, का क्रियान्वयन बहुत धीमी गति से हो रहा है। जांच रिपोर्ट में यह कहा जा सकता है कि भारतीय रेल्वे ट्रेन की सुरक्षा सिग्नल व्यवस्था इन्फ्रास्ट्रक्चर्स बेहतर बनाने पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे रहा हैं। रेल्वे के एक पूर्व अधिकारी आलोक कुमार ने कहा कि भारत में सबसे धीमी गति से चलने वाली रेले हैं फिर भी दुर्घटनाएं होती रहती हैं। सबसे ज्यादा रेल फ्रैक्चर भारतीय रेल के नेटवर्क पर होता है। इससे स्पष्ट है कि सिग्नल व्यवस्था, रेल के डिब्बों और इंजन आदि का रख रखाव बहुत ही धीमी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **बालासोर में, गत बीस साल में हुए सबसे बड़े रेल एक्सीडैंट के बाद यह सवाल सभी रेल विशेषज्ञ पूछ रहे हैं।**
- **सरकार का, व युवा रेल मंत्री वैष्णव का ज्यादा ध्यान ''बिग टिकट प्रोजैक्ट्स'', जैसे वंदे भारत, स्टेशनों के सौंन्दर्यीकरण, नये बड़े रेलवे इंजन व आधुनिक डिब्बों पर रहा है, पर, ''सेफ्टी इशूज़'' को बहुत कम प्राथमिकता मिली है।**
- **अतः एक्सीडैंट तो होते रहे हैं, और होते रहेंगे।**

'पप्पू फॉर पी.एम.'

जाने-माने ''ब्रैण्ड एक्स्पर्ट्स'' का मानना है, भाजपा ने अरबों रूपये खर्च किये, राहुल गांधी की ''पप्पू'' छवि बनाने में। पर, अगर कांग्रेस ह्यूमर (हास्य परिहास) व कटाक्ष का बुद्धिमता से काम ले, ''पप्पू'' छवि का सकारात्मक उपयोग कर सकती है

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 3 जून। देश के राजनैतिक पटल पर ब्रैंड्स तथा सोच (परसेप्शन) निर्माण की मोहक एवं रोचक जंग चल रही है, विपक्षी कांग्रेस, सत्तारूढ़ भाजपा के ''प्रोजैक्ट पप्पू'' की हवा निकालने की कोशिश कर रही है। ज्ञातव्य है कि भाजपा का प्रोजैक्ट पप्पू देश का सबसे बड़ा और सर्वाधिक कामयाब ''सोच निर्माण'' अभियान था, जो भाजपा ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी को निन्दा और उपहास का पात्र बनाते हुये, उन्हें नितान्त मूर्ख के रूप में प्रस्तुत करने के लिये चलाया था।

खास बात यह है कि कांग्रेस प्रोजैक्ट पप्पू के असर को न केवल कम, बल्कि समाप्त कर सकती है और राहुल गांधी को एक बुद्धिमान, सहज सुलभ, मिलनसार, हँसमुख, आकर्षक तथा सैंस ऑफ हयूमर'' वाले नेता के रूप में प्रस्तुत कर सकती हैं। बल्कि भाजपा के प्रोजैक्ट पप्पू को उलटकर अपने फायदे के लिए प्रयुक्त कर सकती है।

चूँकि भाजपा निरन्तर राहुल गांधी को निशाना बना रही है तथा इस प्रकार वह कांग्रेस नेता के लिये अनजाने में मीडिया कवरेज उपलब्ध कराने में मदद कर रही है, भाजपा अनजाने में एक ऐसा काम कर रही है, जिसके लिये कांग्रेस को बहुत बड़ी धनराशि खर्च करनी पड़ती। वस्तुतः भाजपा का उद्देश्य तो राहुल गांधी को खराब एवं नकारात्मक रूप में प्रस्तुत करना, उनकी ''पप्पू'' वाली छवि, जिसे पैदा करने के लिये उसने बहुत मेहनत की थी, के रूप में अनुरूप प्रस्तुत करना ही है।

अब ऐसा प्रतीत हो रहा है कि भाजपा का यह अभियान-इच्छित परिणाम देने के मामले में असफल होना शुरु हो गया है। जनता राहुल गांधी को उनके वास्तविक रूप में देखने लगी है-हाल ही में सम्पन्न भारत जोड़ो यात्रा में, उनके भाषणों में, भारत तथा विदेशों में उनकी बहुत सी प्रैस-कॉन्फ्रैंसों में। और इस प्रकार, भाजपा के ''प्रोजैक्ट पप्पू'' से भाजपा को कम लाभ मिल रहा है।

प्रसंगवश बता दें कि हिमाचल प्रदेश के चुनावों में भाजपा के प्रतिकूल आये चुनाव-परिणाम के बाद, तृणमूल नेता महुआ मोइत्रा ने अर्थव्यवस्था के आँकड़े उद्धृत करते हुये, लोकसभा में भाजपा से पूछा था कि अर्थव्यवस्था को इस स्थिति में लाने तथा हिमाचल प्रदेश के चुनाव हारने के बाद असली पप्पू कौन सिद्ध हुआ। उन्होंने अर्थव्यवस्था की ''मिसहैन्डलिंग'' की आलोचना करते हुये कहा था, ''इस सरकार और सत्तारूढ़ पार्टी ने ''पप्पू'' शब्द गढ़ा था। आप इसका प्रयोग निन्दा करने तथा घोर अक्षमता रेखांकित करने के लिये करते हैं। लेकिन आँकड़े हमें बता रहे हैं कि असली पप्पू कौन है।'' भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा के गृह राज्य में भाजपा की हार पर मोइत्रा ने कहा था, ''वे अपने गृह राज्य पर भी अपनी पकड़ नहीं रख सके। अब कौन है पप्पू?''

ब्रैंड-निर्माण तथा सोच-प्रबंधन प्रोफेशनल्स अब देख रहे हैं कि कांग्रेस

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **ब्रैण्ड विशेषज्ञों के अनुसार, कॉमर्शियल दुनिया में यह प्रायः होता है, जब प्रतिद्वन्दी के ''कैम्पेन'' (विज्ञापन अभियान) को उलट कर, पलट कर कम्पनियाँ अपने व्यवसायिक हित को अच्छी तरह साधती हैं।**
- **उदाहरण के लिये जब, ''कैन्टकी फ्राइड चिकन'' ने भारत में प्रवेश किया तो, उन्हें भारी ''कम्पटिशन'' का सामना करना पड़ा, ''तन्दूरी चिकन'' से। उन्होंने तन्दूरी चिकन की लोकप्रियता का लाभ लेते हुए, ''कैन्टकी फ्राइड चिकन'' को तन्दूरी चिकन का नया अवतार बता कर बेचना शुरू किया और काफी हद तक सफलता पायी।**
- **राहुल गांधी की छवि में, भारत जोड़ो यात्रा और फिर हिमाचल व कर्नाटक में चुनावी जीत के बाद में भारी परिवर्तन हुआ है। अतः कुछ ह्यूमर (हास्य विनोद) का छौंक लगाकर, इस नयी छवि का उपयोग किया जाये तो, भाजपा के ''पप्पू अभियान'' का लाभ उठा लेगी कांग्रेस।**

ममता बनर्जी व अश्विनी वैष्णव की आमने-सामने की तकरार

बालासोर, 3 जून। ओडिशा में कोरोमंडल एक्सप्रेस के दुर्घटना स्थल पर रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव और ममता बनर्जी के बीच आपस में हल्की-फुल्की खींचतान हुई। सबसे पहले ममता बनर्जी ने रेलवे की भूमिका पर सवाल उठाए। ममता ने रेलवे के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **रेल दुर्घटना स्थल पर ममता बनर्जी ने सबसे पहले रेलवे की भूमिका पर सवाल उठाये और कहा कि, यहां 500 लोगों की मौत हुई है, इस पर रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा, उनका आंकड़ा गलत है कुल 238 मौतें हुई हैं।**